



DR. ANTARYAMI MISHRA

Dr. Antaryami Mishra, a distinguished Odia litterateur, a reputed columnist and researcher, has been contributing to the study of Odia language, grammar culture and history for nearly five decades. Though differently abled, he wrote relentlessly in various research articles and books to prove Odia as a Classical Language and much of his thoughts, research work and writings on Odia language opened the vision to other intellectual research scholars and Odia lovers. He expressed historical studies including the growth and development of Odia as a classical language in his research book “Odia-Eka Shastriya Bhasa” published in 2013, prior to declaration of Odia as Classical Language by the Government. This book has been published in Hindi as well.

2. Born on 1st July, 1950, Dr. Mishra is prolific in writing columns for the greater cause of a linguistic Odia University and Odia Bhasara Shastriyata, which led to Government of Odisha forming a special committee for preparation of a report to be submitted for classical status of Odia language. He was also later nominated as a special member to the Committee.

3. Dr. Mishra has been continually awarded nominations by the State Government as member of the “Odisha Sahitya Academy” and has recently been nominated as a member to the “Kendriya Sahitya Academy”. He is the co-writer and leading research scholar of “Odia Bhasa'ra Itibruta” published by Odia Bhasa Pratishthan and co-editor of “Cultural Heritage of Odisha” series on 30 districts of Odisha and contributed several research articles in the series.

4. Dr. Mishra is the son of freedom fighter Late Shri Satyabadi Mishra and have chosen the art of literary production from childhood. Being devoted to spiritualism right from his student career, Dr. Mishra, in his later life, has earned name as a great researcher, an orator, a columnist, spiritual preacher, and a professional commentator. His persistent effort to establish aspects of antiquity and classical traits of Odia language is commendable. His divine discourses are embodied with spiritual and philosophical rudiments and illuminated with blissful grace. By virtue of his writings, criticisms, research articles and preaching, he had unveiled intrinsic truth, hidden essence and inherent mysteries. He is a very popular preacher of Sri Jagannath Cult, Ramayana, Shrimad Bhagwat Geeta, Shrimad Bhagwat and Veda Vedanta.

5. Dr. Mishra was conferred D.Litt. (Honoris Causa) by North Odisha University for his columns, research and writing of books on “Classical Odia”. He has been awarded the “President's Certificate of Honour” for the year 2019 for his contribution to Classical Odia language.



डॉ. अन्तर्यामी मिश्र

डॉ. अन्तर्यामी मिश्र ओड़िया भाषा के एक प्रतिष्ठित साहित्यकार, प्रतिष्ठित स्तंभकार और शोधकर्ता हैं और लगभग पांच दशक से ओड़िया भाषा, व्याकरण संस्कृति और इतिहास के अध्ययन में योगदान दे रहे हैं। दिव्यांग होने के बावजूद, वह ओड़िया को शास्त्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए निरंतर शोध लेख और पुस्तक लिखते रहे तथा ओड़िया भाषा पर उनके विचारों, शोध कार्यों और लेखन ने अन्य प्रबुद्ध शोध विद्वानों और ओड़िया प्रेमियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने सरकार द्वारा ओड़िया को शास्त्रीय भाषा घोषित करने से पहले 2013 में प्रकाशित अपनी शोध पुस्तक "ओड़िया—एका शास्त्रीय भासा" में शास्त्रीय भाषा के रूप में ओड़िया की प्रगति और विकास सहित ऐतिहासिक अध्ययन को अभिव्यक्ति प्रदान की। यह पुस्तक हिन्दी में भी प्रकाशित हुई है।

2. 1 जुलाई, 1950 को जन्मे, डॉ. मिश्र ने भाषाई ओड़िया विश्वविद्यालय और ओड़िया भासा शास्त्रीयता के वृहद कार्य के लिए प्रचुर संख्या में स्तंभ लिखे हैं, जिसके कारण ओड़िशा सरकार ने ओड़िया भाषा की शास्त्रीय स्थिति के लिए प्रस्तुत की जाने वाली रिपोर्ट तैयार करने के लिए एक विशेष समिति का गठन किया। बाद में उन्हें समिति के विशेष सदस्य के रूप में भी नामित किया गया था।

3. डॉ. मिश्र को राज्य सरकार द्वारा "ओड़िशा साहित्य अकादमी" के सदस्य के रूप में लगातार नामित किया जाता रहा है और हाल ही में उन्हें "केंद्रीय साहित्य अकादमी" के सदस्य के रूप में नामित किया गया है। वह ओड़िया भासा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित "ओड़िया भासरा इतिव्रता" के सह-लेखक और अग्रणी शोध विद्वान हैं और ओड़िशा के 30 जिलों पर "ओड़िशा की सांस्कृतिक विरासत" शृंखला के सह-संपादक हैं और उन्होंने इस शृंखला के लिए अनेक शोधपरक लेख लिखे हैं।

4. डॉ. मिश्र स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय श्री सत्यबादी मिश्रा के सुपुत्र हैं और उन्होंने बचपन से ही साहित्य लेखन का क्षेत्र चुना है। अपने छात्र जीवन से ही आध्यात्मिक अनुरक्ति के कारण, डॉ. मिश्रा ने अपने बाद के जीवन में एक महान शोधकर्ता, वक्ता, स्तंभकार, आध्यात्मिक उपदेशक और कुशल टिप्पणीकार के रूप में नाम अर्जित किया है। ओड़िया भाषा की प्राचीनता और शास्त्रीय लक्षणों को स्थापित करने का उनका अनवरत प्रयास सराहनीय रहा है। उनके दिव्य प्रवचन आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा से ओत-प्रोत हैं और आनंदपूर्ण रस से भरे हैं। अपने लेखन, समालोचनाओं, शोध लेखों और उपदेशों के आधार पर, उन्होंने अंतर्भूत सत्य, सन्निहित सार और अंतःस्थापित रहस्य को प्रकट किया था। वह श्री जगन्नाथ पंथ, रामायण, श्रीमद्भगवद् गीता, श्रीमद्भागवत और वेद वेदांत के अत्यंत लोकप्रिय प्रचारक हैं।

5. डॉ. मिश्र को उत्तर ओड़िशा विश्वविद्यालय द्वारा "शास्त्रीय ओड़िया" पर उनके स्तंभ, अनुसंधान और पुस्तक लेखन के लिए डी.लिट (मानद उपाधि) से सम्मानित किया गया। उन्हें शास्त्रीय ओड़िया भाषा में योगदान के लिए वर्ष 2019 का "राष्ट्रपति का सम्मानपत्र" प्रदान किया गया है।